

जगद्गुरु श्री शिवरात्रि राजेन्द्र स्वामी

जगद्गुरु श्री शिवरात्रि राजेन्द्र स्वामी (1916-1986) दक्षिण भारत के आधुनिक युग के महान संत और समाज सुधारक थे। उनका निवास-स्थान मैसूरु के परंपरागत शहर के नजदीक कपिला नदी के किनारे स्थित सुत्तूर नामक स्थान पर था। वह मठ की परंपरा, जिसका एक हजार वर्षों से भी ज्यादा का इतिहास है, के 23वें जगद्गुरु थे। मानवता की सेवा में 62 वर्षों के अपने जीवनकाल में उन्होंने, विशेष रूप से ग्रामीण तथा शहर के गरीबों और समाज के कमजोर वर्गों के बीच ज्ञान का प्रसार किया। प्रेम और अनुकंपा से भरे उनके कृत्यों ने हजारों लोगों के जीवन में खुशहाली लाने में अपना योगदान दिया है। स्वामीजी का जन्म 29.08.1916 को हुआ था और बचपन से ही स्वामीजी जरूरतमंदों को अपना सब कुछ देने में खुशी महसूस करते थे। एक युवा बालक के रूप में ही उनके मन में गरीब छात्रों की मदद करने की जरूरत महसूस हुई और उन्होंने इस दिशा में एक निःशुल्क छात्रावास खोलने की पहल की (अपने शैक्षिक जीवन की परवाह किए बिना)। इस छोटी-सी पहल के परिणामस्वरूप 30 वर्षों की अवधि में तीन सौ से भी अधिक संस्थाओं का निर्माण संभव हो पाया।

जगद्गुरु श्री शिवरात्रि राजेन्द्र स्वामी को शिक्षा के हर एक पहलू के महत्व के बारे में पूरी जानकारी थी, अपनी सूक्ष्म दृष्टि और विशाल दृष्टिकोण से उन्होंने अपने सम्मुख उपलब्ध सारी सुविधाओं का पूरा लाभ उठाते हुए इंजीनियरिंग, चिकित्सा, फार्मेसी और सामान्य विषयों में शिक्षा प्रदान करने हेतु कॉलेज खोले। 1970 से 1980 के दौरान उत्तर भारत के छात्रों तथा युगांडा, जॉर्जिया, तंजानिया और नेपाल जैसे देशों के छात्र इन संस्थानों की शैक्षिक गतिविधियों से लाभान्वित हुए। मैसूरु शहर को उच्च शिक्षा का एक अनुपम गंतव्य बनाने में श्री राजेन्द्र स्वामीजी का योगदान अपूर्व एवं महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके अलावा, उन्होंने लाखों गरीब लोगों की स्वास्थ्य रक्षा हेतु ग्रामीण प्रदेशों में अनेक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना करने के साथ-साथ मैसूरु में

एक बड़ा सुसज्जित अस्पताल प्रारंभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

समाज के सर्व-समावेशी और सर्वतोमुखी विकास को दृष्टि में रखते हुए, स्वामीजी ने भारतीय संगीत और नाटक से संबंधित शिक्षा संस्थान भी खोले। विभिन्न धर्मों और जातियों के लोगों को एक ही छत के नीचे लाकर विश्व बंधुत्व की भावना जगाने की दिशा में भी उन्होंने सफल प्रयास किए। शारीरिक तथा मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के प्रति भी श्री राजेन्द्र स्वामीजी अत्यधिक संवेदनशील थे। उन्होंने उन बच्चों के लिए स्कूल खोलने के लिए पहल की। स्वामीजी मैसूरु के राजवंश के आध्यात्मिक गुरु थे। साठ के दशक के प्रारंभ में मैसूरु के तत्कालीन महाराजा, श्री जयचामराजेन्द्र वोडेयर द्वारा स्वामीजी 'राजगुरु' की उपाधि से विभूषित किए गए।

स्वामीजी हिमालयन प्रतिष्ठान के परमपूज्य स्वामीजी राम, सिद्धि समाधि योग के श्री ऋषि प्रभाकरजी, आर्ट ऑफ लिविंग के श्री श्री रविशंकर, तिब्बत के श्री दलाई लामा जैसे महान संतों तथा अन्य संन्यासियों और मठाधीशों व अपने समकालीन रहस्यवादियों और योगियों के साथ निरंतर संपर्क में रहे। स्वामीजी ने अपने प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व से लाखों लोगों के हृदय पर अमिट प्रभाव छोड़ा। जगद्गुरु श्री शिवरात्रि राजेन्द्र स्वामीजी दैविक दृष्टिसंपन्न, एक अदम्य व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने जीवन के हर वर्ग के लोगों के प्रति प्रेम, दया और उदारता का परिचय दिया।

डाक विभाग, जगद्गुरु श्री शिवरात्रि राजेन्द्र स्वामी पर स्मारक डाक-टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विरूपण : श्रीमति अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	3.03 लाख
Stamps printed	:	0.303 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The above philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

Jagadguru Sri Shivarathri Rajendra Swamy

Jagadguru Sri Shivarathri Rajendra Swamy (1916-1986) was a great saint and social reformer of modern times emerging from South India. He hailed from a place called Suttur on the banks of river Kapila, located near the heritage city of Mysuru. He was the 23rd pontiff of Math's Lineage, which has a history of more than one thousand years. In a span of 62 years of his service to mankind, he undertook dissemination of knowledge, especially among the rural and urban poor, and, weaker sections of the society. His acts of sacrifice filled with love and compassion have contributed to the prosperity of thousands of people. Swamyji was born on 29.08.1916 and since his childhood, he practised and found happiness in giving away whatever he had to the needs. As a young boy, he found the need to support fellow poor students and took the initiative to start a free boarding home (sacrificing his own academic pursuit), which later became a seed for more than three hundred institutions built within a span of 30 years.

Jagadguru Sri Shivarathri Rajendra Swamy realized the importance of each and every facet of education with his astute vision and utilizing the available opportunities, started colleges in engineering, medicine, pharmacy and liberal education disciplines. Students from North India and countries like Uganda, Zambia, Tanzania and Nepal benefitted from the educational activities in these institutions during 1970-80's. He silently revolutionized the field of knowledge by making Mysuru city a destination for good education. In addition, he also played an important role in providing healthcare facilities to numerous poor people by establishing Rural Health Centers and a hospital at Mysuru.

Realising that the society needed an all-inclusive and overall development, he encouraged Indian music and drama through institutional set-up. He promoted activities to regularly get people of different religions and castes under one roof there by promoting the concept of universal brotherhood. Jagadguru Sri Shivarathri Rajendra Swamy was compassionate towards differently abled children as well and took initiative towards starting schools for them. Swamyji was a spiritual guru to the ruling dynasty of Mysuru. Way back in early sixties, he was identified as a 'Rajaguru' by the then Maharaja of Mysuru, Sri Jayachamarajendra Wodeyar.

Swamyji had a very close association and shared time and space with some of the noted spiritual leaders like His Holiness Swami Rama of Himalayan Foundation, Sri Rishi Prabhakar of Siddhi Samadhi Yoga, Sri Sri Ravishankar of Art of Living, Sri Dalai Lama of Tibet and other ascetics and pontiffs of different religious institutions including mystics and yogis who were his contemporaries. Swamyji, through the example of his fruitful life has left an indelible impression in the hearts of millions of people. Jagadguru Sri Shivarathri Rajendra Swamy was an indomitable spirit, with a divine vision. He demonstrated love, generosity and kindness among the people from all walks of life.

Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp on Jagadguru Sri Shivarathri Rajendra Swamy..

Credits:-

Text	: Based on the material received from proponent
Stamp/ FDC/ Cancellation cachet	: Ms. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



जगद्गुरु श्री शिवरात्रि राजेन्द्र स्वामी
JAGADGURU SRI SHIVARATHRI RAJENDRA SWAMY

विवरणिका
BROCHURE